Toppersnotes®
Unleash the topper in you

SET

State Eligibility Test

राज्य पात्रता परीक्षा

इतिहास

पेपर – 2 || भाग – 2

SIERRA INNOVATIONS

विषय-सूची

क्र.सं.	मध्यकालीन भारत का इतिहास	पृष्ठ संख्या
1.	मध्यकालीन भारत के ऐतिहासिक स्त्रोत	1
2.	अरबों द्वारा सिन्ध विजय	13
3.	तुर्कों द्वारा आक्रमण	19
4.	दिल्ली सल्तनत	24
5.	विजयनगर साम्राज्य का प्रशासन	66
6.	मुगल काल	67
	आधुनिक भारत का इतिहास	
1.	आधुनिक भारतीय इतिहास के स्त्रोत	103
2.	मुगल साम्राज्य का पतन	114
3.	क्षेत्रीय शक्तियों का उदय	118
4.	सर्वोच्यता के लिए आंग्ल - फ्रांसीसी संघर्ष	129
5.	बंगाल में ब्रिटिश गतिविधियाँ	132
6.	भारतीय पूँजीपति वर्ग एवं राष्ट्रीय आंदोलन	141
7.	किसान सभा आंदोलन	152
8.	भू-राजस्व प्रशासन, पुलिस, न्यायपालिका और सिविल सेवाएँ	163
9.	महालवाडी पद्धति	169
10.	विदेशी नीति और महत्त्वपूर्ण घरेलू घटनाएँ	182
11.	भारत में औपनिवेशिक नीतियों के आर्थिक प्रभाव	187

मध्यकालीन भारत के ऐतिहासिक स्रोत

किसी भी कालखण्ड की जानकारी प्राप्त करने के लिए स्रोतों की आवश्यकता होती है। ये स्रोत पुरातात्विक तथा साहित्यिक होते हैं । मध्यकालीन भारतीय इतिहास को जानने के लिए पुरातात्विक तथा साहित्य साक्ष्य पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं ।

मध्यकालीन भारत को जानने सम्बन्धी स्रोत

मध्यकालीन भारत के इतिहास को जानने के लिए हमारे पास पुरातात्विक तथा साहित्यिक साक्ष्य उपलब्ध हैं। प्राचीन काल की अपेक्षा मध्यकाल में इतिहास रचना पर अधिक ध्यान दिया गया । इस काल के इतिहासकारों ने आगामी पीढी के लिए अपने अनुभवों को संचित किया ताकि आने वाली पीढी भविष्य में इन संचित अनुभवों से लाभ उठा सके। यही कारण है कि इस काल में अनेक ऐतिहासिक ग्रन्थों की रचना हुई । इस काल के पुरातात्विक स्रोतों, साहित्यिक स्रोतों एवं विदेशी विवरणों का वर्णन निम्नलिखित हैं

पुरातात्विक स्रोत

यद्यपि मध्यकालीन भारतीय इतिहास के अध्ययन की आधारशिला साहित्यिक स्रोत ही हैं तथापि यहाँ पुरातात्विक स्रोतों की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती । पुरातात्विक स्रोतों (Archaeological Sources) के अन्तर्गत हम पुरालेख, सिक्काशास्त्र सम्बन्धी सामग्री और स्मारकों को शामिल करते हैं ।

सल्तनतकालीन एवं मुगलकालीन शासकों द्वारा अनेक मस्जिद, मकबरे एवं स्मारकों का निर्माण करवाया गया तथा साथ-ही-साथ विभिन्न प्रकार के कलात्मक सिक्कों का प्रचलन भी करवाया गया, जिससे हमें उनकी आर्थिक के साथ-साथ तत्कालीन सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थिति का भी ज्ञान प्राप्त होता है। दुर्भाग्यवश हमारे पास पुरालेख सम्बन्धी अथवा अभिलेख सम्बन्धी जानकारियाँ कम हैं, परन्तु उनके सम्बन्ध में स्मारक एवं स्थापत्य सम्बन्ध जानकारियाँ प्रचुर मात्रा में प्राप्त हुई हैं ।

पुरालेख

सल्तनतकालीन मस्जिदों एवं अन्य भवनों की दीवारों पर फारसी में अभिलेख भी खुदवाए गए, परन्तु इन अभिलेखों एवं पुरालेखों की संख्या नगण्य है । यहाँ शासकों के अभिलेख कम प्राप्त हुए हैं । अधिकांश अभिलेख व्यक्तिगत हैं तथापि उनमें शासकों के नामों और तिथियों का उल्लेख किया गया है। मुगलकाल में तो पुरालेखों की संख्या बहुत ही कम है । इन पुरालेख तथा अभिलेखों से विभिन्न शासकों के राज्यों की सीमा एवं शासनकाल के तिथिक्रम के निर्धारण में सहायता मिलती है। कुछ प्रमुख अभिलेख अथवा पुरालेखों का वर्णन इस प्रकार है

- अजमेर के अढाई दिन के झोंपडे पर कुछ पुरालेख उत्कीर्ण हैं, जिनमें यह वर्णन मिलता है कि इस मस्जिद के निर्माण हेतु अनेक मन्दिरों की सामग्री का उपयोग किया गया है तथा उस पर चौहान शासक विग्रहराज चतुर्थ द्वारा रचित नाटक हरिकेलि के कुछ अंश उद्धृत हैं। इसका निर्माण कुतुबुद्दीन ऐबक ने करवाया था ।
- बलबन के समय में प्राप्त पालम बावली अभिलेख में दिल्ली का एक नाम १योगिनीपुर१ मिलता है। अलाउद्दीन खिलजी के समय के अभिलेख में उसे 'विश्व विजेता' एवं 'जनता का चरवाहा' कहा गया है। मोहम्मद बिन तुगलक को एक अभिलेख में 'विश्व का सुल्तान' वर्णित किया गया है तथा उसकी उपाधि 'जूना खाँ' या 'जौना खाँ' का भी उल्लेख अभिलेखों में मिलता है ।

- मुगलकाल में अनेक पुरालेख उनके स्मारकों पर प्राप्त होते हैं; जैसे दिल्ली के किले में दीवान-ए-खास की छत पर यह पंक्ति उद्धृत हैकृ "गर फिरदौसी वर रूमी जमा अस्त, अमा अस्त, अमा अस्त अमा अस्त" अर्थात् धरती पर कहीं स्वर्ग है तो यहीं है, यहीं है, यहीं है ।

मुद्राशास्त्र

तुर्कों के आगमन के साथ मध्यकालीन भारत की मुद्रा प्रणाली के इतिहास में एक नए चरण का आरम्भ हुआ । प्रारम्भ में तुर्कों द्वारा पुरानी मुद्रा प्रणाली को बनाए रखा गया, लेकिन बाद में उनका कलात्मक विकास हुआ । इतिहास के पुनर्निर्माण में सिक्कों का विशेष महत्त्व रहा है, क्योंकि हमें इससे शासक की समृद्धि के साथ-साथ साम्राज्य विस्तार का ज्ञान भी प्राप्त होता है ।

सल्तनतकालीन सिक्के

- मोहम्मद गोरी के सोने के सिक्के 64 ग्रेन से 66.5 ग्रेन भार के थे, जिन पर 'लक्ष्मी की आकृति' तथा देवनागरी भाषा में 'मुहम्मद बिन साम' अंकित था। इल्तुतमिश पहला तुर्क शासक था, जिसने शुद्ध अरबी सिक्के चलाए, उसने चाँदी का टंका तथा ताँबे का जीतल (सिक्का) चलाया तथा सिक्कों पर टकसाल का नाम लिखने की प्रथा प्रारम्भ की। चाँदी के सिक्के का वजन 175 ग्रेन तथा ताँबे का वजन 22 ग्रेन से लेकर 33.5 ग्रेन तक था ।
- रुकनुद्दीन शाह ने चाँदी व मिश्रित धातु के सिक्के चलवाए । रजिया ने अपने शासनकाल में तीन धातुओं-चाँदी, मिश्रित धातु व ताँबे के सिक्के जारी किए । उसके चाँदी के सिक्के 159 ग्रेन के थे। सुल्तान बहरामशाह ने केवल मिश्र धातु के सिक्के जारी किए। अलाउद्दीन खिलजी ने अपने सिक्कों पर श्सिकन्दर अल सानीश अंकित करवाया तथा सोने, चाँदी, ताँबा एवं मिश्रित धातुओं के सिक्के चलाए। मोहम्मद बिन तुगलक (जौना खाँ) ने मुद्रा व्यवस्था में उल्लेखनीय परिवर्तन किए, उसके सिक्कों पर नवीन आख्यान व पदवियाँ अंकित हुई। सर्वप्रथम उसने ही सोने के सिक्कों पर 'कलमा' खुदवाया, उसने दोकानी तथा दीनार नामक स्वर्ण मुद्राएँ, चाँदी का 140 ग्रेन का अदली नामक सिक्का तथा चाँदी के छोटे सिक्के 'चिहल-ओ-हश्तकनी', 'बिश्त-ओपेज- कनी', 'बिश्त ओचारकन', 'इजदाकनी' व 'शशगनी' प्रचलित किए। अफीफ के अनुसार फिरोजशाह तुगलक ने 'अदा' एवं 'बिख' नामक ताँबे व चाँदी के सिक्के चलाए। सुल्तान बहलोल लोदी ने जीतल के स्थान पर बहलोली नामक सिक्का जारी किया, जो मुगल सम्राट अकबर के समय तक विनिमय का माध्यम रहा ।

मुगलकालीन सिक्के

- इस काल की मुद्रा प्रणाली अत्यन्त सुव्यवस्थित थी । इस समय सोने, चाँदी एवं ताँबा तीनों धातुओं में सिक्कों का निर्माण किया गया। अबुल फजल के अनुसार 1575 ई. में (अकबर के समय) ताँबे के सिक्के के लिए 42- चाँदी के लिए 14 तथा सोने के सिक्कों की मुहरों के लिए 4 टकसाले थीं ।
- बाबर ने काबुल में चाँदी का 'शाहरुख' तथा कन्यार में 'बाबरी' नामक सिक्का चलाया। शेरशाह ने मिश्रित मुद्रा बन्द करवाकर शुद्ध सोने, चाँदी एवं ताँबे के सिक्कों का प्रचलन किया। सोने के सिक्के अशरफ, चांदी के रुपया तथा ताँबे के दाम नामक सिक्कों का प्रचलन किया गया। उसके समय चाँदी के रुपये तथा ताँबे के दाम का विनिमय अनुपात 1 रू 64 था। चाँदी का 'रुपया' सर्वप्रथम शेरशाह ने जारी किया था, जिसका वजन 180 ग्रेन था। ताँबे का दाम 380 ग्रेन का था, जो रुपये का 40वाँ भाग था। अन्य ताँबे के सिक्के अधेला, पावला, दमडी व जीतल थे। जनता का साधारण सिक्का दाम था।

अकबरकालीन सोने के सिक्के

अकबरकालीन सोने के सिक्कों का वर्णन इस प्रकार है

- मुहर सर्वाधिक प्रचलित नौ रुपये के बराबर सोने का सिक्का ।
- शंसब यह सबसे बडा सोने का सिक्का, (101 तोले का) था, जो बडे लेन-देन में प्रयोग किया जाता था ।
- इलाही इस सोने के सिक्के का आकार गोल तथा मूल्य 10 रुपये के बराबर था ।
- रहस यह साढे 5 तोले का, गोल तथा चौकोर सिक्का था। आत्मह यह 25 तोले का सिक्का था ।
- बिन्सात यह लगभग 20 तोले का सिक्का था ।
- चगुल या लाल जलाली यह कम वजन के प्रमुख सिक्के थे ।

अकबर ने मुद्रा प्रणाली को सुदृढता प्रदान की, उसके सिक्को पर कलमा स्थान पर अल्लाह-उ-अकबर, जल्ले जलालहू तथा टकसाल का नाम अंकित था। चाँदी के सिक्कों पर धनुर्धारी राम और सीता की प्रतिमाएँ अंकित हैं। असीरगढ की विजय के बाद उसने बाज आकृति के सिक्के ढलवाए। उसके कुछ प्रमुख सिक्के इस प्रकार हैं

- जहाँगीर ने सलीमी सिक्के जारी किए। सर्वप्रथम उसने राजा को आकृतियुक्त सिक्के जारी किए, उसके एक सिक्के पर हिन्दू-राशि चक्र के चिह्न मिले हैं। 'निसार' (चाँदी का सिक्का), 'नूर अफशाँ' व 'खैर काबुल' उसके शासनकाल के प्रमुख सिक्के थे ।
- शाहजहाँ ने आना नामक सिक्का चलाया। यह दाम एवं रुपये के होता था। एक रुपये में 16 आने होते थे। औरंगजेब के समय सिक्कों पर 'मीर अब्दुलबाकी शाहबई' द्वारा रचित पद्म अंकित करवाया गया। मुगलकाल में सर्वाधिक रुपये की ढलाई औरंगजेब के समय हुई ।

विजयनगरकालीन सिक्के

- विजयनगर के शासकों द्वारा सोने का वाराह नामक सिक्का चलाया गया। यह सिक्का 52 ग्रेन का था, जिसे विदेशी यात्रियों ने हूण, परदौस या पगोडा के रूप में उल्लिखित किया है। इससे सम्पूर्ण भारत तथा विश्व में मान्यता प्राप्त थी। सोने के छोटे सिक्के को प्रताप तथा फणम एवं चाँदी के छोटे सिक्के को तार कहा जाता था ।
- हरिहर के सिक्कों पर हनुमान तथा गरुड की आकृतियाँ उत्कीर्ण थीं। सदाशिवराय के सिक्कों पर लक्ष्मीनारायण, तिरुमल के सिक्कों पर वराह (सुअर) का अंकन तथा तुलुव शासकों के सिक्कों पर बालकृष्ण, बैल, गरुड, उमा महेश्वर एवं वेंकटेश का अंकन मिलता है ।
- विजयनगर राज्य के पश्चिमी तटीय क्षेत्रों में क्रूजेडो (पुर्तगाली), दीनार (फारसी), फ्लोरिन और डुकेट (इटली) मुद्राएँ प्रचलित थीं ।
- उपरोक्त वर्णित विभिन्न सिक्कों के द्वारा मध्यकालीन भारतीय इतिहास के शासकों, उनकी अभिरुचियों, नामों, टकसालों के नाम आदि का विस्तृत विवरण मिलता है, जिससे इतिहास के पुनर्निर्माण में सहायता मिलती है ।

चाँदी तथा लोहे के सिक्के

चाँदी के सिक्के इस प्रकार थे-

रुपया	178 ग्रेन का था।
जलाली	175.5 ग्रेन का था।
अन्य	दरब, चरन, चन्दन, दह, कल सुकी आदि।

ताँबे के सिक्के दाम एवं जीतल थे, अधोला, पाक्ला व दमडी भी ताँबे के सिक्के थे।

सल्तनतकालीन स्मारक एवं भौतिक साक्ष्य

सल्तनतकालीन इतिहास के अध्ययन में पुरातात्विक स्रोत भी हमें महत्त्वपूर्ण जानकारी देते हैं। इस समय अनेक भवनों का निर्माण हुआ। इस समय के भग्नावशेषों को देखकर तत्कालीन कलात्मक प्रगति एवं राज्य की समृद्धि का अनुभव मिलता है। इस काल में अनेक महत्त्वपूर्ण इमारतें बनवाई गईं; जैसे-ऐबक द्वारा कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद, कुतुबमीनार तथा अढाई दिन का झोपडा आदि ।

सल्तनतकालीन स्थापत्य

- इसके अतिरिक्त दिल्ली सल्तनत की कुछ प्रमुख इमारतें इस प्रकार -सुल्तानगढी का मकबरा, इल्तुतमिश द्वारा निर्मित हौज-ए-शम्सी, शम्सी ईदगाह, बदायूँ की जामा मस्जिद, अतरकीन का दरवाजा आदि । बलबन ने स्वयं अपना मकबरा बनवाया था । खिलजी वंश के सुल्तानों द्वारा निर्मित अलाई दरवाजा, जमातखाना मस्जिद, हजार सितून (हजार खम्भों वाला महल), हौज अलाई आदि बहुत महत्त्वपूर्ण पुरातात्विक स्रोत हैं ।
- तुगलक काल में ग्यासुद्दीन तुगलक द्वारा निर्मित तुगलकाबाद का किला, उसका स्वयं का मकबरा, मुहम्मद बिन तुगलक द्वारा निर्मित आदिलाबाग का किला, जहाँपनाह, सतपुतला, बारहखम्भा आदि से हमें ऐतिहासिक स्रोतों की जानकारी प्राप्त होती है। फिरोज तुगलक ने कोटला फिरोजशाह, कुश्क-ए-शिकार, खान-ए जहाँ तेलंगानी का मकबरा, काली मस्जिद, खिर्की मस्जिद, बेगमपुरी मस्जिद आदि का निर्माण करवाया था ।
- सैयदों एवं लोदियों द्वारा निर्मित इमारतें इस प्रकार हैं- मुबारकशाह सैयद का मकबरा, मोहम्मदशाह का मकबरा आदि। लोदियों ने अपने मकबरों के साथ-साथ मोठ की मस्जिद का भी निर्माण करवाया था।

प्रान्तीय स्थापत्य शैलियाँ

- इन शैलियों में अनेक इमारतें बनीं; जैसे-जौनपुर में अटाला मस्जिद, लाल दरवाजा मस्जिद, झंझरी मस्जिद, मालवा में लाट मस्जिद, माण्डू का किला, अशरफी महल, हिण्डोला महल, जहाज महल, बाज बहादुर तथा रूपमती का महल आदि। गुजरात में अदीना मस्जिद, खम्भात की मस्जिद, तीन दरवाजा, अहमद शाह का मकबरा आदि का निर्माण हुआ है। इन इमारतों का निर्माण इब्राहिम शाह शर्की ने करवाया ।
- बंगाल में लोटन मस्जिद, छोटी सोना मस्जिद, कदम रसूल मस्जिद, बडी सोना मस्जिद आदि मस्जिदें बनी हैं । कश्मीर में हमदान की मस्जिद, काठी दरवाजा, संगीन दरवाजा, पेरी महल आदि स्थापत्य बनें। दक्कन में अहमदनगर का किला, बाग-ए-रौजा, बाग-ए-बाहिश्त, कोटला मस्जिद, रूमी खाँ का मकबरा, बीजापुर में जामा मस्जिद, रौजा- ए- इब्राहिम, गोल गुम्बद (युसूफ आदिलशाह) मेहतर महल आदि का निर्माण किया गया, जिससे तत्कालीन सामाजिक एवं सांस्कृतिक आदि विषयों पर प्रकाश पडता है ।

मुगलकालीन स्मारक एवं भौतिक साक्ष्य

- इस काल की इमारतों से भी तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक जानकारियाँ प्राप्त होती हैं। बाबर ने पानीपत की काबुली मस्जिद एवं रुहेलखण्ड की सम्भल मस्जिद का निर्माण करवाया था। हुमायूँ ने दीनपनाह नामक पाँचवीं दिल्ली की नींव रखी। शेरशाह ने दिल्ली शेरशाही (छठी दिल्ली) नामक नगर बनवाया। पुरानी दिल्ली में शेरशाह को निर्माता के रूप में जाना जाता है ।
- अकबर द्वारा दिल्ली में हुमायूँ का मकबरा हमीदाबानो की देख-रेख में बनवाया गया, जो ताजमहल का पूर्वगामी कहा जाता है। आगरा में आगरा का किला एवं अकबरी महल बनवाया गया। इसके अतिरिक्त लाहौर का किला, अजमेर का किला अटक का किला, इलाहाबाद का किला अर्थात् कुल 5 किलों का निर्माण करवाया गया। फतेहपुर सीकरी में उसने दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास, पंचमहल, तुर्की सुल्तान

का महल, खास महल, जोधाबाई का महल, मरियम का महल तथा बीरबल का महल बनवाया । बुलन्ददरवाजा, इस्लाम खाँ तथा शेख सलीम चिश्ती का मकबरा भी यहीं निर्मित करवाया गया था ।

- जहाँगीर ने अकबर का मकबरा (सिकन्दरा) एवं एऐतमाद-उद्-दौलाह का मकबरा बनवाया (आगरा), जिसमें पित्रादुरा का प्रयोग बडे पैमाने पर किया गया था, उसने स्वयं का मकबरा लाहौर (शहादरा) में बनवाया था ।
- शाहजहाँ का काल 'स्थापत्य कला का स्वर्ण काल' कहा जाता है, उसके द्वारा निर्मित भवन इस प्रकार हैं- आगरा में ताजमहल, शीशमहल, मोती मस्जिद, खास महल, मुसम्मन बुर्ज, शाहबुर्ज, नगीना मस्जिद, जामा मस्जिद आदि। दिल्ली अवस्थित जामा मस्जिद का निर्माण मुगल शहँशाह शाहजहाँ ने करवाया था।
- शाहजहाँ द्वारा दिल्ली में लाल किले में दीवान-ए-आम, मुमताज महल का खास महल, रंगमहल या इम्तियाज महल आदि बनवाए गए। औरंगजेब के समय दिल्ली में मोती मस्जिद, रबिया-उद्-दौरानी का मकबरा तथा लाहौर की बादशाही मस्जिद का निर्माण किया गया ।

अन्य स्थापत्य

सल्तनत और मुगल शासकों के स्थापत्य के अतिरिक्त भी मध्यकाल में कुछ अन्य स्थापत्य थे, जो महत्त्वपूर्ण पुरातात्विक स्रोत माने जाते हैं। इनका वर्णन निम्नलिखित है ।

- इस काल में राजपूतों द्वारा अनेक इमारतें बनवाई गईं, जो हमें अनेक ऐतिहासिक जानकारियाँ प्रदान करती हैं। राजा कीर्तिसिंह ने अनेक महल, राजा वीरसिंह देव ने जहाँगीर मन्दिर तथा वीरसिंह बुन्देला ने झाँसी का किला बनवाया। अम्बेर नगर (जयपुर शासकों की राजधानी) की तुलना फतेहपुर सीकरी से की जाती है। राजा मानसिंह ने गोविन्द देव का मन्दिर, वीरसिंह देव का मन्दिर आदि का निर्माण करवाया। सिन्धिया की माता द्वारा बनवाया गया विश्वेश्वर का मन्दिर, उदयपुर में महाराजा जगतसिंह द्वारा निर्मित जगदीश मन्दिर अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है ।
- मराठों द्वारा निर्मित इमारतें जेजुरी खण्डोवा मन्दिर, शम्भाजी की समाधि, विठ्लवाडी मन्दिर, सिगनपुर का शम्भू महादेव मन्दिर आदि मराठों द्वारा निर्मित प्रमुख इमारतें हैं। जीजाबाई ने गणेश मन्दिर तथा येसूबाई ने पासान के शिवालय का जीर्णोद्धार करवाया था। विजयनगर शासकों में कृष्णदेवराय ने 'हजरा राम' एवं 'विट्ठल स्वामी मन्दिर' का निर्माण करवाया। इसके अतिरिक्त अम्मान मन्दिर (मन्दिर के साथ देवता की पत्नी हेतु) एवं तिरुपति मन्दिर बनाए गए, जिसकी प्रमुख विशेषता कल्याण मण्डप था। बहमनी साम्राज्य में सात मकबरे, हफ्तगुम्बद सोलह खम्भा मस्जिद, चाँद मीनार आदि का निर्माण किया गया था ।

इतिवृत्ति

- इतिहास में घट चुकी घटनाओं को इतिवृत्ति कहा जाता है। मध्यकाल में विभिन्न प्रकार की इतिवृत्तियों की रचना हुई । हालाँकि प्राचीन भारत में इनका अभाव था, लेकिन मध्यकाल में इतिहास लेखन के साथ-साथ अन्य प्रकार की रचनाएँ जैसे— वंशावलियाँ, जीवन वृत्तान्त युद्ध वृत्तान्त आदि की रचना की गई, परन्तु दुःख इस बात का है कि इस विषय में भी अभिलेखों एवं पुरालेखों की भाँति हमें प्राप्त जानकारी का अभाव है ।
- अंसाब पूर्व इस्लाम काल में अरबों के बीच वंशावलियाँ लिखने की परम्परा विकसित थी, जिन्हें 'अंसाब' कहते थे। अरबों ने यस्मा उल रिजाल नामक नई श्रेणी की रचनाएँ प्रस्तुत कीं, जिनमें विभिन्न व्यक्तियों के सम्बन्ध में संक्षिप्त जीवन वृत्तान्त संकलित था। 'सीरत' हजरत मोहम्मद की जीवनियों का संकलन है। युद्धों के वृत्तान्त को रमगाजीर के रूप में संकलित किया गया । 'तबकात' सामान्य इतिहास से सम्बन्धित ग्रन्थ है, जिसमें विभिन्न समुदायों के सम्बन्ध में ऐतिहासिक जानकारी प्रस्तुत की गई है। प्रशस्तियों की परम्परा प्राचीन काल से ही थी । मध्यकालीन प्रशस्तियों के लिए 'मनाकिब' एवं 'फजायल' नामक शब्दों का प्रयोग किया गया है । इन प्रशस्तियों में उस काल के शासकों की उपलब्धियों, गुणों व महानता का वर्णन है । प्रशस्तियों में सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ बद्रुद्दीन द्वारा रचित शाहनामा है, जो मोहम्मद बिन तुगलक को समर्पित है ।

- बद्र-ए-चाच (बदरुद्दीन) मोहम्मद बिन तुगलक के दरबार का प्रमुख कवि था, उसने मोहम्मद बिन तुगलक की प्रशंसा में कसीदो नामक ग्रन्थ की रचना की थी । नैतिक उपदेश प्रदान करने वाली रचनाओं में सर्वप्रथम शम्स-ए-शिराज-अफीफ की तारीख-ए-फिरोजशाही है। इसमें फिरोजशाह तुगलक के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। इतिवृत्तियाँ विशेष रूप से क्षेत्रीय एवं जन-सामान्य के जीवन की झलक प्रस्तुत करती है। मराठों की जानकारी हेतु बखर आदि जैसे ग्रन्थ भी इतिवृत्ति के अन्तर्गत आते हैं ।

साहित्यिक स्रोत

साहित्यिक स्रोत (Literary Sources) वह होते हैं, जिनकी रचना लेखनबद्ध रूप में की जाती है। इनके अन्तर्गत फारसी ग्रन्थ, संस्कृत ग्रन्थ, क्षेत्रीय भाषाओं, दफ्तरखाना, फरमान, बहियाँ/ पोथियाँ / अखबारात तथा विदेशी यात्रियों (फारसी एवं अरबी) का अध्ययन किया जाता है ।

सल्तनतकालीन फारसी साहित्य

सल्तनतकालीन फारसी साहित्य का वर्णन निम्न स्रोतों से प्राप्त जानकारी के आधार पर किया जाता है ।

- तबकात-ए-नासिरी की रचना मिनहाज उस सिराज ने की थी। इसमें मोहम्मद गोरी की भारत विजय तथा नव स्थापित तुर्की सल्तनत के इतिहास का प्रत्यक्ष विवरण मिलता है । इसमें सर्वप्रथम दिल्ली सल्तनत का क्रमबद्ध इतिहास है ।
- तारीख-ए-फिरोजशाही इसका लेखक जियाउद्दीन बरनी है। यह लेखक गयासुद्दीन तुगलक, मुहम्मद बिन तुगलक और फिरोजशाह तुगलक का समकालीन था । बरनी ने बलबन से लेकर फिरोजशाह तुगलक तक का ।
- इतिहास लिखा है । यह पुस्तक इसलिए भी बहुत उपयोगी है, क्योंकि यह एक ऐसे व्यक्ति द्वारा लिखी गई है, जो शासन के उच्च पद पर नियुक्त था और जिसे शासन का वास्तविक ज्ञान प्राप्त था । बरनी ने इस पुस्तक में भूमि कर के प्रबन्ध का विस्तृत रूप से वर्णन किया है। इसमें अलाउद्दीन की बाजार व्यवस्था का वर्णन है ।
- फतवा-ए-जहाँदारी यह बरनी की एक अन्य पुस्तक है । इस पुस्तक लेखक ने शासन की धार्मिक व लौकिक नीति के विषय में विस्तृत वर्णन किया है । इसमें उस आदर्श राजनैतिक संहिता का स्पष्ट चित्र प्रस्तुत किया गया है, जिसके पालन की आशा लेखक मुसलमान शासकों से करता था ।
- तारीख-ए-फिरोजशाही की रचना शम्स-ए सिराज अफीफ ने की थी। इसमें फिरोज तुगलक के शासनकाल का वर्णन मिलता है, जोकि प्रत्यक्ष देखकर लिखा गया था। इसमें तैमूर के आक्रमण का प्रत्यक्ष विवरण है ।
- सीरत-ए-फिरोजशाही एवं फुतुहात-ए-फिरोजशाही का लेखक अज्ञात है, परन्तु इसमें सुल्तान फिरोजशाह की अत्यधिक प्रशंसा की गई है । यह सुल्तान फिरोजशाह की आत्मकथा है । इस रचना में फिरोजशाह की नीतियों की चर्चा की गई है तथा उसके द्वारा स्वयं को एक आदर्श मुसलमान सिद्ध करने का प्रयास किया गया है ।
- फुतूह उस सलातीन ख्वाजा अब्दुल्लाह मलिक इसामी द्वारा रचित यह ग्रन्थ अलाउद्दीन बहमनशाह को समर्पित है। इसमें मुहम्मद बिन तुगलक को 'बुद्धिमान मूर्ख' कहा है तथा बहमनशाह की प्रशंसा की गई है ।
- कामिल-उल-तवारीख के रचनाकार शेख अब्दुल हसन है। इसमें मोहम्मद गोरी की विजयों का वृत्तान्त मिलता है ।
- तारीख-ए-सिन्ध या तारीख-ए-मासूमी के रचनाकार मीर मोहम्मद मासूम है । इसमें 'चचनामा' पर आधारित सिन्ध का इतिहास है । तारीख-ए-मुबारकशाही इसकी रचना याह्या बिन अहमद सरहिन्दी ने की थी। यह सैयद वंश का एकमात्र समकालीन स्रोत है ।

- वाक्यात-ए-मुश्ताकी के रचनाकार रिजकुल्लाह थे। इसमें लोदी और शूर वंश के अतिरिक्त मालवा और गुजरात के अफगानों का भी वर्णन है। तारीख-ए-सलातीन-ए-अफगान यह अहमद यादगार की रचना है। इसमें बहलोल लोदी से लेकर हेमू की मृत्यु तक की घटनाओं का वर्णन है। ईशा-ए महारु तुगलक काल में ऐनुल मुल्क के पत्रों का संकलन है।
- इसमें तुगलक वंश से सम्बन्धित जानकारी उपलब्ध है।
- रियाजुल इंशा इसमें महमूद गवाँ के पत्रों का संकलन है तथा इसमें बहमनी राज्य से सम्बन्धित जानकारी मिलती है।
- कुतुब उर रहलाद एक मूरिश यात्री इब्नबतूता ने 'किताब-उर-रहलाद' लिखी। इब्नबतूता 1333 ई. में भारत आया था। वह नौ वर्ष तक भारत में रहा और 8 वर्ष तक उसने दिल्ली के काजी के पद पर कार्य किया। यह पुस्तक उसी समय की एक समकालीन रचना है।

सल्तनतकालीन अमीर खुसरो द्वारा लिखित ग्रन्थ

अमीर खुसरो द्वारा लिखित ग्रन्थ निम्न हैं-

- किरान उस आदेन इसमें बुगरा खाँ व उसके बेटे कैकूबाद के मिलन तथा दिल्ली की स्थापत्य कला का वर्णन है।
- मिफता-उल-फुतुह इसमें जलालुद्दीन खिलजी के सैन्य अभियानों का वर्णन है।
- खजाईनुल फुतुह इसे 'तारीख-ए-अलाई' नाम से भी जाना जाता है। इसमें अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल के 16वें वर्ष तक का विवरण एवं उसके दक्षिण सैन्य अभियान तथा अन्य राज्यों के विजय अभियानों का विवरण है।
- आशिका इसमें देवल रानी और खिज्र खाँ की प्रेमकथा का वर्णन है। यह खिज्र खाँ के आदेश पर लिखा गया ग्रन्थ था।
- नुह-सिपिहर इसमें मुबारकशाह खिलजी का चाटुकारितापूर्वक वर्णन किया गया है। इसमें भारतीय पशु-पक्षियों एवं जलवायु का वर्णन है। इसमें कुतुबुद्दीन मुबारकशाह के शासनकाल की राजनीतिक और सामाजिक दशा का वर्णन है।
- तुगलकनामा यह अन्तिम कृति है, जो एक मनसबी है। इसमें खुसरवशाह एवं ग्यासुद्दीन के मध्य युद्ध एवं कूटनीति का वर्णन है।

मुगलकालीन फारसी साहित्य

- इस साहित्य के अन्तर्गत सामान्य इतिहास से सम्बद्ध रचनाएँ, जीवन वृत्तान्त, सरकारी एवं गैर-सरकारी ऐतिहासिक रचनाओं, आत्मकथाओं, प्रशासनिक दस्तावेजों तथा सरकारी पत्रों इत्यादि को रखा जा सकता है। कुछ मुगल सम्राटों ने अपनी जीवनियाँ एवं संस्मरण भी लिखे, जिनसे तत्कालीन इतिहास पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। इस श्रेणी में सबसे महत्त्वपूर्ण रचना है- बाबर की आत्मकथा 'तुज़ुक-ए-बाबरी' (वाकियात-ए-बाबरी)। यह पुस्तक मूलतरू तुर्की भाषा में लिखी गई थी, जिसका बाद में फारसी भाषा में श्बाबरनामा१ के नाम से अनुवाद हुआ। बाबर ने इसमें भारत की राजनीतिक तथा प्राकृतिक स्थिति एवं सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन पर अपने विचार लिखे हैं। इससे आरम्भिक मुगलकालीन इतिहास पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। बाबर की बेटी एवं हुमायूँ की बहन गुलबदन बेगम ने हुमायूँ की जीवनी 'हुमायूँनामा' लिखी। इसमें हुमायूँ के कार्यकलापों के विषय में महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ मिलती हैं। जहाँगीर ने भी अपनी आत्मकथा 'तुज़ुक-ए-जहाँगीरी' लिखनी आरम्भ की, लेकिन इसे वह पूरा नहीं कर सका, जिसे बाद में मोतमिद खाँ ने पूरा किया। इसके पश्चात् भी यह पुस्तक जहाँगीर के शासनकाल के आरम्भिक 19 वर्षों की जानकारी प्रदान करती है।

- मुगलकालीन इतिहास पर तबकात श्रेणी की रचनाओं से महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। इस श्रेणी के अन्तर्गत अनेक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रन्थों को रखा जा सकता है। इसमें प्रमुख हैं-निजामुद्दीन अहमद द्वारा लिखित तबकात-ए-अकबरी, बदायूँनी द्वारा लिखित मुन्तखाब-उल- तवारीख, फरिश्ता द्वारा लिखित गुलशन ए इब्राहिमी एवं खफी खाँ द्वारा लिखित मुन्तख-उल-लुबाब। 'तबकात-ए-अकबरी' से भारतीय इतिहास पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। लेखक ने इस ग्रन्थ में पूर्ववर्ती अनेक लेखकों को उद्धृत किया है तथा अपने अनुभव के आधार पर राजनीतिक घटनाओं का भी उल्लेख किया है। यह पुस्तक बैरम खाँ के पतन, मजहर की घोषणा, अकबर के सैनिक अभियानों तथा प्रशासनिक व्यवस्था पर प्रकाश डालती है।
- बदाँयूनी की रचना भी अकबरकालीन इतिहास का एक प्रमुख स्रोत है। वह अपनी पुस्तक में महमूद गजनी के आक्रमण से लेकर अकबर के शासनकाल के 40 वर्षों तक का विवरण देता है। वह अकबर के प्रशासन एवं उसकी धार्मिक नीतियों पर भी प्रकाश डालता है।
- 'सद्र-उस-सुदूर' के कार्यों का जितना विशद् वर्णन बदायूँनी ने किया है, वह अन्य किसी तत्कालीन स्रोत में उपलब्ध नहीं है। बदायूँनी की रचना से अकबर की जो प्रशस्ति अबुल फजल ने प्रस्तुत की है, वह सन्तुलित हो जाती है। फरिश्ता की रचना भी सामान्य इतिहास से सम्बन्धित ग्रन्थ है, लेकिन इसमें मुगल सम्राटों एवं दक्षिणी रियासतों के साथ उनके सम्बन्धों को प्रभावशाली ढंग से उजागर किया गया है। इसी प्रकार खफी खाँ की रचना भी सामान्य इतिहास का वर्णन करने के साथ-साथ दक्षिण भारत में औरंगजेब एवं मराठों के संघर्ष पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालती है। खफी खाँ ने शिवाजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर भी प्रकाश डाला है।

क्षेत्रीय इतिहास के प्रमुख लेखक

पुस्तक	लेखक	सम्बन्धित क्षेत्र का
तारीख-ए-रशीदी	मिर्जी हैदर	कश्मीर का इतिहास
रियाज-ए-सलातीन	गुलाम हुसैन	बंगाल का इतिहास
तारीख-ए-गुजरात	मीर अबु तुरबवली	गुजरात का इतिहास
तजकिरातुल-मुलुक	रफीउद्दीन शिराजी	बीजापुर का इतिहास
मिरात-ए-अहमदी	अली मोहम्मद बिन खान	गुजरात का इतिहास
बुरहान-ए-मासिर	सैयद अली तबतबा	गुलबर्गा, बीदर, अहमदनगर का इतिहास

मुगलकालीन दरबारी इतिहास

- मुगलकाल में एक नए प्रकार के ऐतिहासिक ग्रन्थों की रचना आरम्भ हुई, जिसे दरबारी इतिहास की संज्ञा दी जा सकती है। इस परम्परा का आरम्भ अकबर के समय में हुआ था। अकबर ने अपने दरबारी इतिहासकार अबुल फजल से अपने शासनकाल की महत्वपूर्ण घटनाओं का विश्वसनीय विवरण तैयार कराया, जो अकबरनामा के नाम से प्रसिद्ध है। इसे पाँच खण्डों में लिखने की योजना बनाई गई थी, लेकिन इसके केवल तीन खण्ड ही लिखे जा सके।
- प्रथम खण्ड में आदम से लेकर अकबर के 17वें राज्यकाल तक तथा दूसरे भाग में अकबर के शासनकाल के 46वें वर्ष तक का इतिहास लिखा गया है। तीसरे खण्ड में राज्य एवं प्रशासन से सम्बन्धित अनेक महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्रदान की गई हैं। यह तीसरा खण्ड 'आइन-ए-अकबरी' के नाम से जाना जाता है, जिसकी रचना अकबर के शासनकाल के 42वें वर्ष के अन्त में हुई थी।
- अबुल फजल की १अकबरनामा१ से प्रेरणा लेकर मुगलकाल में अन्य दरबारियों द्वारा ऐतिहासिक ग्रन्थों की रचना हुई। बाबर, हुमायूँ एवं शेरशाह के शासनकाल पर ऐतिहासिक ग्रन्थ लिखे गए हैं। अब्बास खाँ शेरवानी ने 'तारीख-ए-शेरशाही' जैसी रचनाएँ लिखीं। शेरवानी की पुस्तक शेरशाह के शासनकाल की एकमात्र विश्वसनीय ऐतिहासिक रचना है।

- अकबर द्वारा आरम्भ की गई परम्परा को जहाँगीर एवं शाहजहाँ ने बनाए रखा । मोतमिद खाँ ने 'इकबालनामा-ए-जहाँगीरी' एवं अब्दुल हमीद लाहौरी ने 'पादशाहनामा' नामक रचना लिखी । औरंगजेब के शासनकाल में मिर्जा मोहम्मद काजिम ने इसी परम्परा में 'आलमगीरनामा' की रचना की, परन्तु अपने शासन के 11वें वर्ष में औरंगजेब ने इतिहास लेखन पर रोक लगा दी ।

संस्कृत साहित्य

मध्यकाल में फारसी साहित्य की भाँति संस्कृत साहित्य का भी विकास हुआ तथा अनेक संस्कृत ग्रन्थों की रचना तथा फारसी ग्रन्थों से संस्कृत में उनका अनुवाद हुआ, जो हमारे लिए महत्वपूर्ण स्रोत उपलब्ध कराते हैं । तुगलक शासक फिरोजशाह तुगलक के काल में जिया नक्शबी ने शुक सप्तति नामक संस्कृत ग्रन्थ का फारसी में अनुवाद किया । ओडिशा के शासक प्रताप रुद्रदेव के दरबार में विद्वान् अगस्त्य ने 'प्रताप रुद्रदेव यशोभूषन' व 'कृष्णचरित' नामक ग्रन्थ की रचना की । विद्या चक्रवर्तिन ने वल्लाल तृतीय के समय 'रुक्मिणी कल्याण' लिखा तथा माधव ने 'नर्कासुर विजय' की रचना की । अभिनव पम्पा ने 'पम्पा रामायण' रचना लिखी । विद्यारण्य ने 'शंकर विजय' की रचना की । विजयनगर शासक विरुपाक्ष ने 'नारायण विलास' तथा कृष्णदेवराय ने 'जाम्बती-कल्याण', 'ऊषा-परिणयम', जयसिंह सूरि ने हम्मीर मद मर्दन तथा गंगाधर ने गंगादास प्रताप विलास नामक ग्रन्थ लिखा । संस्कृत साहित्य मुगलकाल में भी समृद्ध हुआ । अकबर के समय में प्रसिद्ध जैन विद्वान् पद्मशंकर ने सर्वप्रथम 'फारसी प्रकाश' नामक फारसी-संस्कृत शब्दकोश का संकलन किया । महेश ठाकुर ने 'सर्वदेश वृत्तान्त संग्रह' लिखा, जिसमें अकबर का इतिहास संस्कृत में वर्णित है । पद्मसुन्दर ने 'अकबरशाही शृंगार दर्पण' की रचना की जहाँगीर व शाहजहाँ के समय जगन्नाथ पण्डित ने रसगंगाधर तथा गंगा-लहरी की रचना की जगन्नाथ की अन्य कृतियाँ हैं – 'मीमांसाखण्डन' व 'आसफ विजय' मुनिश्वरदास ने 'सिद्धान्त सार्वभौम' की रचना की थी । औरंगजेब के समय रघुनाथ द्वारा 'मुहुर्तमाला' नामक संस्कृत ग्रन्थ की रचना हुई । इन सभी ग्रन्थों से हमें मध्यकालीन इतिहास के पुनर्निर्माण में सहायता मिलती है ।

क्षेत्रीय भाषाएँ

क्षेत्रीय भाषाओं में बांग्ला, असमी, मराठी, गुजराती, तेलुगू, कन्नड व कश्मीरी प्रमुख हैं, जिनका विकास फारसी, उर्दू, हिन्दी और संस्कृत भाषाओं के साथ हुआ । बांग्ला साहित्य की प्रथम रचना 'चरियापाद' है । कवीन्द्र और श्रीकरनन्दी ने (नुसरतशाह के समय में) महाभारत को बंगाली पदों में रूपान्तरित किया । कृतिवास ने 'रामायण' का बांग्ला भाषा में अनुवाद किया । मालधर वसु ने भागवत पुराण का बांग्ला में अनुवाद किया । असमी भाषा की प्रथम कवयित्री हेम सरस्वती थी, जिन्होंने प्रह्लाद कविता तथा हर गौरी की रचना असमी भाषा में की । बाद में शंकरदेव ने असमी भाषा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया । शंकरदेव ने 'कीर्तन घोष' नामक पुस्तक लिखी । बहमनी साम्राज्य में प्रशासनिक भाषाओं में एक मराठी भाषा भी थी । सत ज्ञानेश्वर को मराठी भाषा का जनक माना जाता है, उन्होंने भगवतगीता पर भावार्थ दीपिका नामक टीका लिखी ।

तेलुगू और कन्नड भाषाओं का विकास विजयनगर साम्राज्य के अधीन हुआ । तेलुगू साहित्य का चरमोत्कर्ष कृष्णदेवराय के काल में हुआ, उसने स्वयं 'तेलुगू में आमुक्तमाल्यद' की रचना की । पेदन्ना ने मनुचरित की रचना की । कन्नड में वसव और अन्य लोगों ने रचनाएँ कीं । वीर शैव कवि भीम ने वासवपुराण की रचना की तथा कुमार व्यास ने (विजयनगर) महाभारत का कन्नड में भारतम् नाम से अनुवाद किया ।

अन्य साहित्यिक स्रोत

मध्यकालीन इतिहास को जानने के लिए उपलब्ध फारसी, संस्कृत एवं क्षेत्रीय भाषाओं के साहित्यों के अतिरिक्त कुछ अन्य स्रोत भी उपलब्ध थे, जिनका वर्णन निम्नलिखित है–

दफ्तरखाना

- दफ्तरखाना आधुनिक कार्यालय का एक रूप था, जिसकी शुरुआत मुगल शासक अकबर द्वारा 1574 ई. में की गई थी।
- यह एक प्रकार का रिकॉर्ड रूम था, जहाँ राज्य से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण कागजी दस्तावेजों एवं फाइलों को सुरक्षित रूप से रखा जाता था।
- दफ्तरखाना का उल्लेख अकबरकालीन कवि अबुल फजल ने अपनी रचना आइन-ए-अकबरी में किया है। दफ्तरखाना के सन्दर्भ में सामान्य दृष्टिकोण यह है कि इसमें एक छोटा कमरा था, जिसमें एक बडी खिडकी होती थी, जिसे अकबर का झरोखा के नाम से जाना जाता था।
- इसी झरोखे से अकबर प्रतिदिन जन समूहों को दर्शन देता था।

फरमान

- फरमान मध्यकालीन शासकों द्वारा जारी किया गया एक प्रकार का राजकीय आज्ञा या आदेश था। इसके माध्यम से (सन्देश) शासकीय आदेशों एवं निर्देशों को साधारण जनता तक पहुँचाया जाता था।
- दिल्ली सल्तनतकाल के शासक ऐबक, इल्तुतमिश, बलबन, अलाउद्दीन खिलजी, मो. बिन तुगलक, फिरोजशाह तुगलक तथा सिकन्दर लोदी ने शासन से सम्बन्धित अनेक आदेश फरमान के रूप में जारी किए। ऐसी ही स्थिति मुगल वंश के शासकों में भी देखने को मिलती है। मध्यकालीन शासकों द्वारा भी एक राज्य से दूसरे राज्य को फरमान जारी किया जाता था। यह फरमान कालान्तर में ऐतिहासिक स्रोत का आधार बना।

बहियाँ / पोथियाँ / अखबारात

बहियाँ/ पोथियाँ या अखबारात मध्यकालीन इतिहास को जानने के मुख्य साधन हैं। इसका प्रमुख कारण है, क्योंकि इसमें तत्कालीन सुल्तान/बादशाह एवं साम्राज्य के दैनिक कार्यों का उल्लेख मिलता है। बहियों में राज्य के सुबह रात तक की दिनचर्या का विवरण लिखा जाता था साथ ही बादशाह द्वारा साम्राज्य के हित में लिए जाने वाले निर्णयों का उल्लेख बहियों या पोथियों में किया जाता था। इन कार्यों के सम्पादन के लिए मुलाजिम नियुक्त किए जाते। थे, जिनका दिन भर यही कार्य होता था कि बादशाह के दैनिक कार्यों को लिपिबद्ध कर बहियों या पोथियों में समावेशित करें। से इन स्रोतों से उस काल की प्रमाणिक सूचना मिलती है। उदाहरण के रूप में हम देख सकते हैं कि मुगल दस्तावेज 'अखबारात' में 24 जनवरी 1705 का विवरण दर्ज है कि औरंगजेब ने दो दरोगाओं मोहम्मद खलील और खिदमत राय को आदेश दिया कि वे पंढरपुर के विठ्ठल मन्दिर को तोडे और वहाँ के सभी कसाइयों को ले जाकर मन्दिर में गाय काटें

विदेशी यात्रियों के विवरण

मध्यकालीन इतिहास को जानने के लिए विदेशी यात्रियों के विवरण भी महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इनमें मुख्य रूप से अरबी, फारसी एवं यूरोपीय यात्रियों के वृत्तान्त (कहानी) महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं।

अरबी यात्रियों के विवरण

भारतीय सन्दर्भ में विभिन्न अरबी यात्रियों ने अपने-अपने वृत्तान्त दिए हैं, जो इस प्रकार हैं-

- सुलेमान यह एक प्रसिद्ध अरबी यात्री था, जिसने 9वीं शताब्दी में 'अखबार अल-सिन्द वल हिन्द' नामक ग्रन्थ की रचना की। इसने भारत के पूर्वी तट की अपनी यात्रा का विवरण दिया है। सुलेमान ने बंगाल के पालवंशीय शासकों की शक्ति एवं लोकप्रियता का वर्णन किया है। सुलेमान ने पाल प्रतिहार एवं राष्ट्रकूट संघर्ष का भी वर्णन किया है। इसने विशेष रूप से राष्ट्रकूट शासक अमोघवर्ष की वीरता तथा महानता का भी वर्णन किया है।
- अलमसूदी यह एक अरबी यात्री था, जिसने 956 ई. में मुरुज अज-जहब नामक ग्रन्थ की रचना की। इसने 943 ई. में भारत के
- पश्चिमी तट की यात्रा की थी। गुजरात के प्रतिहार शासकों की शक्ति तथा राष्ट्रकूट एवं पालों के बीच संघर्ष का वर्णन भी अलमसूदी ने किया है। इब्न खुर्दाब का विवरण भी 9वीं शताब्दी के भारत के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं के लिए महत्त्वपूर्ण माना जाता है।
- अलबरूनी इसका जन्म 973 ई. में खीवा में हुआ था। यह अफगान शासक महमूद गजनवी के साथ भारत आया था। इसकी महत्त्वपूर्ण रचना अरबी भाषा में (1030 ई. में) लिखी गई। यह रचना है किताब उल हिन्द या तहकीक-ए-हिन्द (भारत की खोज) है। इस पुस्तक में भारत के सामाजिक जीवन, धार्मिक जीवन, खगोल विज्ञान, रीति-रिवाज एवं त्यौहारों का विशद् वर्णन मिलता है।
- अबु जइद अरबी यात्री अबु जइद ने 916 ई. में सिलसिला उत तवारीख नामक ग्रन्थ की रचना की। इसने भारत एवं चीन की यात्रा की तथा इसका तुलनात्मक विवरण भी प्रस्तुत किया है।

फारसी यात्रियों के विवरण

रसी यात्रियों के विवरण से प्राप्त भारत के विषय में जानकारी का वर्णन निम्न है -

- मिनहाज-उस-शिराज यह तेरहवीं शताब्दी का फारसी इतिहासकार था। यह दिल्ली सल्तनत के मामलूक वंश का इतिहासकार था। इसने भारत में मुहम्मद गोरी द्वारा की गई, तुर्की राज्य की स्थापना का वर्णन किया है। इसने मामलूक या गुलाम वंश के शासक सुल्तान नासिरुद्दीन मुहम्मद के सम्मान में तबकात-ए-नासिरी नामक ग्रन्थ की रचना की।
- उत्बी यह अफगान शासक मुहम्मद गजनवी (यामिनी वंश) के साथ भारत आया था। इसने अरबी भाषा में 'तारीख ए यामिनी' नामक ग्रन्थ की रचना की।
- निजामुद्दीन अहमद इन्होंने फारसी भाषा में तबकात-ए-अकबरी नामक ग्रन्थ की रचना की। इस ग्रन्थ से अकबरकालीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों की जानकारी मिलती है।
- मोतमिद खाँ यह एक उत्तम कोटि का फारसी इतिहासकार था। इसने जहाँगीर द्वारा आरम्भ किए गए, 'तुजुक-ए-जहाँगीरी' का कार्य पूरा किया।

यूरोपीय यात्रियों के विवरण

भारत के बारे में जानकारी के लिए यूरोपीय यात्रियों द्वारा दिए गए विवरण भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

- निकोलो कॉण्टी के यात्रा वृत्तान्त से देवराय प्रथम कालीन विजयनगर साम्राज्य की स्थिति पर प्रकाश पडता है।
- अब्दुर्रज्जाक (1443 ई.) के यात्रा विवरणों से देवराय द्वितीय की विजयनगर की भव्यता, प्रशासनिक व्यवस्था और सामाजिक जीवन पर प्रकाश पडता है।
- निकितिन (1470 ई.) इस घोडे के व्यापारी के यात्रा वृत्तान्त से दक्षिण भारतीय इतिहास पर पर्याप्त प्रकाश पडता है।

- बारबोसा (1500–16 ई.) कृत 'द बुक ऑफ डुआर्ते बारबोसा' विजयनगर शासक कृष्णदेवराय के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती है। लुडोविक डी बर्थेमा कृत यात्रा वृत्तान्त भी विजयनगर इतिहास का महत्त्वपूर्ण स्रोत है। डोमिंगो पायस का यात्रा वृत्तान्त विजयनगर की भव्यता व कृष्णदेवराय के जीवन पर प्रकाश डालता है। इसी प्रकार यह नूनिज अच्युतदेवराय के शासनकाल की जानकारी देता है। सीजर फ्रेडरिक ने तालीकोटा युद्ध के बाद विजयनगर की दुर्दशा का वर्णन किया है।
- रॉल्फ फिंच ने 16वीं सदी में भारत की व्यापार दशा का वर्णन किया है। वह पहला ब्रिटिश यात्री था, जिसने आगरा व फतेहपुर सीकरी की यात्रा की। यह अकबर के काल में भारत में आया था।
- जॉन लिस्कोटन डच यात्री था। इसके वर्णन से 16वीं सदी के दक्षिण भारत की आर्थिक दशा का विवरण मिलता है। विलियम हॉकिन्स जहाँगीर के शासनकाल की महत्त्वपूर्ण जानकारी देता है। वह इंग्लैण्ड के राजा जेम्स प्रथम का राजदूत बनकर आया था, उसने अनारकली की दन्तकथा का उल्लेख किया है।
- टॉमस रो की पुस्तक 'A Voyage to East India' में 16वीं सदी की व्यवस्था का स्पष्ट विवरण मिलता है।
- पेट्रो डेला–वाले (1623 ई.) नामक इतालवी यात्री की रचनाओं से 17वीं शताब्दी की भारतीय सामाजिक दशा एवं प्रथाओं पर प्रकाश पडता है। पीटरमुण्डी यह शाहजहाँ के शासनकाल के बारे में तथा दुर्भिक्ष का विवरण देने वाला इतालवी यात्री था।
- जीन बैप्टिस्ट वर्नियर ने 1638–63 ई. के बीच छः बार भारत की यात्रा की। इसकी पुस्तक Travel in India में समकालीन भारत की आर्थिक स्थिति के साथ-साथ समुद्री मार्गो, सिक्कों, बाटों, निर्यातों, परिवहन के साधनों आदि की भी जानकारी मिलती है।
- मनूची कृत Storio dor Mogor में औरंगजेबकालीन आर्थिक स्थिति का चित्रण मिलता है।
- बर्नियर ने अपनी पुस्तक History of the Late Rebellion in the States of the Great Mughal में शाहजहाँ के उत्तराधिकार के लिए होने वाले युद्ध का विवरण दिया है। वह शाहजहाँ के दरबार में फ्रांसीसी चिकित्सक था।

अरबों द्वारा सिंध की विजय

भूमिका
अरब एवं बाद में तुर्को द्वारा भारत पर आक्रमण भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाएँ हैं । अरबों द्वारा धन की लूट के लिये सिंध एवं उसके आसपास के क्षेत्रों में आक्रमण किये गए । भारत पर सर्वप्रथम मुस्लिम आक्रमण 711 ई. में उबैदुल्लाह के नेतृत्व में हुआ । इसके बाद 711 ई. में ही बुंदेल के नेतृत्व में दूसरा आक्रमण हुआ । ये दोनों ही आक्रमण असफल हुए । अंततः 712 ई. में मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में पहला सफल मुस्लिम आक्रमण भारत पर हुआ । उस समय सिंध पर दाहिर का शासन था। सिंहध विजय के बावजूद अरब आक्रमणकारी भारत में उस प्रकार का साम्राज्य नहीं बना पाए जैसा कि उस समय उन्होंने एशिया अफ्रीका और यूरोप के विभिन्न भागों में बनाया था ।

712 ई. में अरबों से पराजय तथा आगामी चुनौतियों का सामना करने के लिये कई नई शक्तियों का प्रादुर्भाव हुआ, जिन्होंने भारत में आगामी 300 वर्षो तक शासन किया । अरब आक्रमणों से सुरक्षित रहा, लेकिन 1000 ई. के आसपास भारत में एक बार पुनः विकेंद्रीकरण और विभाजन की स्थितियाँ सक्रिय हो उठीं । परिणामतः तुर्को ने महमूद गजनवी के नेतृत्व में भारत पर आक्रमण किये । भारत में मुस्लिम शासन की स्थापना का श्रेय अरबों की अपेक्षा तुर्को को दिया जाता है ।

आठवी शताब्दी के आरंभ में भारत की राजनीतिक दशा
इस समय देश में कोई सर्वोच्च केंद्रीय शक्ति नहीं थी । भारत विभिन्न छोटे छोट राज्यों का संग्रह था और प्रत्येक राज्य स्वतंत्र एवं सार्वभौम था । आठवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में प्रमुख राज्य निम्न थे ।

अफगानिस्तान
अरब आक्रमण के समय अफगानिस्तान में एक ब्राह्मण वंश का शासन था । मुसलमान लेखकों ने इस वंश को हिंदुशाही साम्राज्य अथवा काबुल या जाबुल साम्राज्य कहा है ।

कश्मीर
सातवीं शताब्दी में कश्मीर में दुर्लभवर्धन ने कार्कोट वंश की स्थापना की । ह्वेनसांग ने उसके शासनकाल में कश्मीर की यात्रा की । दुर्लभवर्धन का उत्तराधिकारी दुर्लभक 632-682 ई. हुआ, जिसने प्रतापादित्य की उपाधि धारण की ।

कश्मीर के शासकों में ललितादित्य मुक्तापीड, जो लगभग 724 ई. में सिंहासन पर बैठा उसका साम्राज्य पूर्व में बंगाल, दक्षिण में कोंकण, उत्तर पश्चिम में तुर्कमेनिस्तान और उत्तर पूर्व में तिब्बत तक विस्तृत था। वह अपने वंश का प्रतापी शासक था । उसके समय में सूर्य देवता के लिये मार्तंड मंदिर बनवाया गया । 740 ई. के लगभग उसने कन्नौज के राजा यशोवर्मन को पराजित किया ।

नेपाल
सातवीं शताब्दी में नेपाल, जिसके उत्तर में तिब्बत व दक्षिण में कन्नौज का राज्य था, हर्ष के साम्राज्य में मध्यवर्ती राज्य था । अंशुबर्मन ने नेपाल में वैश्व ठाकुरी वंश की नींव रखीं उसने तिब्बत के साथ मैत्री संबंध स्थापित किये । उसने अपनी कन्या का विवाह तिब्बत के शासक के साथ किया । हर्ष की मृत्यु के बाद तिब्बत व नेपाल की सेना ने चीन के राजदूत वांग ह्यांगसे को कन्नौज के सिंहासन का अपहरण करने वाले अर्जुन के विरूद्ध सहायता प्रदान की ।

कामरूप (असम)

हर्ष के समय कामरूप में भास्कर वर्मन का शासन था । हर्ष की मृत्यु के उपरांत उसने अपने राज्य की स्वतंत्रता की घोषणा की । यह प्रतीत होता है कि वह अधिक समय तक स्वाधीन न रह सका । भास्कर वर्मन ने लगभग 650 ई. तक शासन किया । भास्कर वर्मन के बाद उसका वंश समाप्त हो गया। कालांतर में कामरूप पाल साम्राज्य का अंग बन गया ।

कन्नौज

- हर्ष की मृत्यु के पश्चात् अर्जुन ने कन्नौज पर अधिकार कर लिया । उसने चीन के राजदूत वांग ह्यूंगसे का विरोध किया, जो हर्ष की मृत्यु के उपरात वहां पहुंचा था । वांग ह्यंगसे पुनः असम् तिब्बत व नेपाल की सैन्य सहायता लेकर लौटा । युद्ध में अर्जुन की हार हुई । अर्जुन को बंदी बनाकर चीन ले जाया गया तत्पश्चात् वहीं कारागार में उसकी मृत्यु हो गई ।
- आठवीं शताब्दी के आरंभ में यशोवर्मन कन्नौज के सिंहहासन पर बैठा । अपने पराक्रम से उसने पुनः कन्नौज को अपने अतीत का गौरव प्रदान किया । वह सिंध के राजा दाहिर का समकालीन था ।
- इसके उपरांत कन्नौज पर आधिपत्य के लिये 8 वीं शताब्दी की तीन बडी शक्तियों पाल, गुर्जर प्रतिहार व राष्ट्रकूटों के मध्य एक संग्राम हुआ, जिसे त्रिपक्षीय संघर्ष के नाम से जाना जाता है । कुछ समय के लिये कन्नौज पर प्रतिहारों का आधिपत्य स्थापित हो गया, परंतु बाद में उनका स्थान पाल वंश ने ले लिया । अंततोगत्वा इस युद्ध में प्रतिहारों की विजय हुई । इसके बाद प्रतिहार उत्तर भारत की एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में उभर कर आए ।

बंगाल

- बंगाल में गौड शासक शशांक का शासन था जिसने 600 से 638 ई. तक गौड साम्राज्य पर शासन किया । इसी समय राजा शशांक का युद्ध हर्षवर्धन से भी चलता रहा । शंशाक की मृत्यु के बाद उसके बेटे मानव ने 8 माह तक गौड पर शासन किया ।
- शशांक की मृत्यु के पश्चात लगभग एक शताब्दी तक बंगाल में अराजकता और अव्यवस्था से तंग आकर बंगाल के प्रमुख नागरिकों ने गोपाल नामक एक सुयोग्य सेनानायक को अपना राजा बनाया । गोपाल ने जिस नवीन राजवंश की स्थापना की उसे पाल वंश कहा गया ।
- गोपाल द्वारा स्थापित किये गये पाल वंश ने 12 वीं शताब्दी तक राज्य किया । धर्मपाल, देवपाल व महीपाल इस वंश के प्रसिद्ध शासक हुए ।

सिंध

- सिंध में रायवंश का शासन था । जब ह्वेनसांग भारत आया, उसने सिंध में शूद्र शासक को पाया ।
- हर्ष ने अपने कार्यकाल में सिंध पर विजय प्राप्त की थी, लेकिन हर्ष की मृत्यु के उपरांत सिंध स्वतंत्र हो गया ।
- रायवंश का अंतिम शासक राय साहसी द्वितीय था । ब्राह्मण मंत्री चाच ने उसके उपरांत उसके राज्य पर अधिकार करके ब्राह्मण वंश की नींव रखी ।
- चाच के पश्चात् चंदर व चंदर के बाद दाहिर गद्दी पर बैठा । इसी सिंध राजा दाहिर ने सिंध आक्रमण के समय अरबों का सामना किया ।

सिंध विजय से पूर्व अरबों के असफल आक्रमण

- सर्वविदित है कि वास्तविक रूप से सिंध को अरबों ने 712 ई. में विजित किया, लेकिन ऐसा नहीं कि इससे पहले अरबों ने इस ओर कोई विजय की कोशिश नहीं की ।
- कहा जाता है कि खलीफा उमर के समय 636 ई. में बंबई के निकट थट्टा की विजय के लिये एक मुस्लिम नाविक अभियान भेजा गया, परंतु वह असफल रहा । तत्पश्चात् भड़ौच, देवल तथा बलूचिस्तान स्थित मकरान में कई आक्रमण किये गए ।
- अंततः आठवी सदी के प्रथम दशक में सिंध के प्रदेश मकरान को जीत लिया । इस अभियान का नेतृत्व इब्न अल हरि अल बहित्ती ने किया था ।

अरबों का सफल आक्रमण

अरबों द्वारा भारत पर पहला सफल आक्रमण 712 ई. में मुहम्मद बिन कासिम द्वारा किया गया । इस आक्रमण से पूर्व घटित घटनाओं को कई इतिहासकार अरबों द्वारा सिंध पर आक्रमण का मुख्य कारण मानते हैं। इन कारणों में प्रमुख हैं-

- लंका के राजा ने खलीफा के उत्तरी प्रांतों के अध्यक्ष हज्जाज के पास अपने राज्य के उन मुसलमान व्यापारियों की जिनकी मृत्यु हो चुकी थी, अनाथ कन्याओं को भेजा, जिन्हें समुद्री लुटेरों ने सिंध के तट के पास छीन लिया ।
- एक अन्य वर्णन के अनुसार लंका के राजा ने स्वयं इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया और वह खलीफा के पास सैनिक व मूल्यवान उपहार भेज रहा था, तभी मार्ग में सिंध के तट के पास उन्हें लूट लिया गया ।
- खलीफा ने अपने प्रतिनिधियों को भारत से दासियाँ व अन्य वस्तुओं को खरीदने के लिये भेजा, जिन्हें दाहिर के राज्य के मुख्य बंदरगाह देवल में पहुँचने पर समुद्री लुटेरों ने लूट लिया । परिणामतः सिंध के राजा दाहिर से खलीफा ने क्षतिपूर्ति की मांग की, किन्तु दाहिर ने इस मांग को अस्वीकार कर दिया । अंततः खलीफा ने सिंध पर आक्रमण का निर्णय लिया ।

कारण कुछ भी हो, लेकिन वास्तविकता में अरबों की सिंध विजय का कारण इस्लाम धर्म का प्रचार प्रसार और लूट की धनराशि से धनवान बनने का दृढ निश्चय था । ऐसा इसलिये क्योंकि भारत पर आक्रमण से पूर्व वह अफ्रीका और यूरोप के विशाल क्षेत्रों को अपने अधीन कर चुके थे ।

मुहम्मद बिन कासिम के अभियान

देवल अभियान

- मुहम्मद बिन कासिम ने मकरान के रास्ते सर्वप्रथम देवल पर आक्रमण किया ।
- 712 ई. में मुहम्मद बिन कासिम देवल के बंदरगाह पर पहुंचा और उसे घेर लिया । देवल में दाहिर के भतीजे ने उसका डटकर सामना किया, परंतु छली ब्राह्मणों द्वारा कासिम का साथ दिये जाने के कारण देवल में जल्द ही मुहम्मद बिन कासिम को विजय प्राप्त हुई ।

निरून अभियान

देवल से मुहम्मद बिन कासिम निरून की ओर बढा जहाँ बौद्ध भिक्षुओं ने बिना युद्ध किये उसकी अधीनता स्वीकार कर ली ।